डॉ. राजीव कुमार,

इतिहास विभाग,

एच.डी. जैन कॉलेज, आरा

---

* हड़प्पा सभ्यता की नगर योजना *

Urban planning of

Harappan Civilization

----------+----------+---------

"हड़प्पा सभ्यता" विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है। इसे हम "सिंधु घाटी सभ्यता", "सरस्वती नदी घाटी की सभ्यता" अथवा "सिंधु-सरस्वती की सभ्यता" के नाम से भी जानते हैं। इस सभ्यता का सर्वमान्य काल 2500 ई.पू से 1750 ई.पू के बीच मानी गई है। हड़प्पा सभ्यता की नगर योजना के संबंध में हमारी जानकारी का स्रोत उत्खनन में मिले नगरों के भग्नावशेष हैं। हड़प्पा कालीन जिन नगरों के विवरण हमें मिलते हैं, उनमें प्रमुख हैं - हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, धोलावीरा, कालीबंगा, लोथल, बनवाली इत्यादि।

ये सभी नगर अत्यंत सुव्यवस्थित, योजना बद्ध और उन्नत नगर योजना के उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। हड़प्पावासी न केवल व्यापार, कृषि और शिल्प में निपुण थे, बल्कि वे नगर निर्माण, नगरों की स्वच्छता और जल प्रबंधन के क्षेत्र में भी आश्चर्यजनक रूप से विकसित थे।

नगरों की संरचना :

हड़प्पा सभ्यता के अधिकांश नगर दो भागों में वर्गीकृत थे -

1. ऊंचा भाग, जिसे किला अथवा दुर्ग क्षेत्र भी कहा गया है। इस क्षेत्र में संभवत: शासक वर्ग, पुजारी अथवा अधिकारी वर्ग के लोग निवास करते थे।

2. निचला भाग, जिसे सामान्यतः नगर क्षेत्र की संज्ञा दी गई है, यहां सामान्य जनता निवास करती थी।

दोनों ही भागों को एक ऊंची ईटों की दीवार से अलग किया गया था। यह विभाजन सामाजिक संगठन और सुरक्षा के दृष्टिकोण से किया गया प्रतीत होता है।

सड़कों की व्यवस्था (Road system)

---

* सड़कों का जाल एकदम नियत ग्रिड पैटर्न पर बिछा हुआ था।

* सडकें एक-दूसरे को समकोण (Right Angle) पर काटती थीं।

* मुख्य सड़कों की चौड़ाई 30 फीट तक और गली-कूचों की चौड़ाई 5 से 10 फीट तक थी।

* सड़कों के दोनों और जल निकासी के लिए नालियां बनी थी, जिन्हें ईंटों और पत्थरों से ढका गया था। यह योजना आज के आधुनिक नगर योजना जैसी लगती है।

जल निकासी व्यवस्था (Drainage System)

---

* हड़प्पा सभ्यता की सबसे अद्भुत विशेषता उसकी जल निकासी प्रणाली थी।

* प्रत्येक घरों से एक नाली निकलकर मुख्य नाली में मिलती थी।

* नालिया पक्की ईंटों से बनाई गई थी और उन्हें नियमित रूप से साफ किया जाता था।

* नालियों में निरीक्षण कुंड (Inspection Pits) भी बने होते थे, जिससे सफाई में सुविधा होती थी।

* हड़प्पा नगरों की यह व्यवस्था आज भी कई आधुनिक नगरों से श्रेष्ठ मानी जाती है।

घरों का निर्माण (Houses and Buildings)

---

* हड़प्पा संस्कृति के नगरों की सबसे प्रमुख विशेषता यह थी कि घरों का निर्माण पक्की ईंटों से की गई थी। यद्यपि अपवाद स्वरूप कालीबंगा से कुछ कच्ची ईंटों से बनी मकानें भी मिली हैं।

* अधिकांश घरों में कई कमरे, आंगन (Courtyard) और कुएं (Private wells) होते थे।

* लगभग प्रत्येक घरों में स्नानघर और जल- निकासी की अच्छी व्यवस्था थी।

* घरों के दरवाजे मुख्य सड़क की ओर नहीं, बल्कि गलियों की ओर खुलते थे। संभवत: यह निजता (Privacy) और सुरक्षा के दृष्टिकोण से किया जाता था।

* कुछ बड़े मकान बहुमंजिला भी बने हुए थे। बनवाली से हमें दो और तीन मंजिलें भवनों के अवशेष मिले हैं।

सार्वजनिक भवन (Public Buildings)

---

* मोहनजोदड़ो का महान स्नानागार (Great Bath)। यह सार्वजनिक स्नान या धार्मिक आयोजन का स्थल था, जिसकी जलरोधी ईंटों और बिटुमिन से बनी दिवारें, उनके वैज्ञानिक उपलब्धि को प्रदर्शित करते हैं।

* अन्नागर (Granary) - हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और धोलावीरा में मिली विशाल अन्न भंडार उनके आर्थिक संगठन का प्रमाण है।

* सभा भवन / प्रशासनिक स्थल - कुछ स्थानों पर बड़े हॉल और मंचन स्थल मिले हैं, जो संभवत: सामाजिक या प्रशासनिक प्रयोजनों में प्रयुक्त होते होंगे। मोहनजोदड़ो में हमें 20 स्तंभों वाले एक ऐसे ही विशाल भवन के अवशेष मिले हैं।

नगर योजना के मूल सिद्धांत :

---

1. मानकीकरण : ईटों, सड़कों, भवनों और निकासी की समान रूपरेखा।

2. स्वच्छता और स्वास्थ्य का ध्यान : स्नान, नालियां, कुएं और सोखते गड्ढे।

3. प्रशासनिक नियंत्रण : नगर नियोजन से केंद्रीकृत शासन का संकेत मिलता है।

4. पर्यावरण के अनुरूप निर्माण : ऊंचे प्लेटफार्मो पर नगर बनाकर बाढ़ से सुरक्षा।

नगर नियोजन के प्रमुख उदाहरण -

स्थल	विशेषताएं
मोहनजोदड़ो :	महान स्नानागार, बहु-मंजिला मकान, अन्नागर, उन्नत जल निकासी प्रणाली।
हड़प्पा :	अन्नागर, सुव्यवस्थित सड़कों का जाल।
धोलावीरा :	तीन भागों में विभाजित नगर, जल संचयन टैंक।
लोथल :	बंदरगाह और गोदाम, व्यापार केंद्र
कालीबंगा :	अग्निकुंड, कच्ची ईटों की दीवारें, अलंकृत इटें।

निष्कर्ष :-

हड़प्पा सभ्यता की नगर योजना मानव इतिहास की एक अद्वितीय उपलब्धि है। इसकी वैज्ञानिक सोच, संगठनात्मक क्षमता, स्वच्छता और सौंदर्य बोध आधुनिक नगरों को भी प्रेरणा देते हैं। यद्यपि इस सभ्यता का पतन लगभग 1750 ई.पू में हो चुका था, परंतु इसकी नगर नियोजन परंपरा भारतीय नगर संस्कृति में स्थाई छाप छोड़ गई है।